BHOPAL BIRDS
Committed to save nature

भोपाल बर्ड्स ई–पत्रिका
जून–जुलाई 2018

तीन दिवसीय पक्षी गढ़ना

दिनांक 8 जून 2018 से 10 जून 2018 तक भोपाल बर्ड्स एवं इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क द्वारा तीन दिवसीय पक्षी गढ़ना का आयोजन सारस जैवविविधता केंद्र बिशनखेड़ी में आयोजित गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वर्षा ऋतू में भोज ताल में मिलने वाले पक्षिओं की गढ़ना करना था। इस गढ़ना में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों की अलग अलग टीम बनाकर भोज ताल के आस पास गढ़ना हेतु भेजी गई। इन प्रतिभागियों ने जलीय व स्थलीय पक्षिओं की लगभग 60 प्रजातियों को चिन्हित किया।

गढ़ना में मिले 60 प्रजातियों के पक्षी

प्रतिभागियों ने गढ़ना के दौरान कई प्रवासी एवं दुर्लभ पक्षियों को चिन्हित किया। गढ़ना में देखे गये प्रमुख पक्षी एवं संख्या इस प्रकार हैं।

सारस क्रेन (लगभग 120), ग्रेटर फ्लेमिंगो (लगभग 16), स्पॉट बिल डक (लगभग 200), लैसर व्हिस्टलिंग डक (लगभग 500),पेंटेड स्टोर्क (लगभग 400),ओरिएंटल प्रेंटिकोल (लगभग 50),वूलीनेक स्टोर्क (लगभग 100),स्पून बिल (लगभग 500),रिवर टर्न (लगभग 1000),लिटिल टर्न (लगभग 50), आदि।

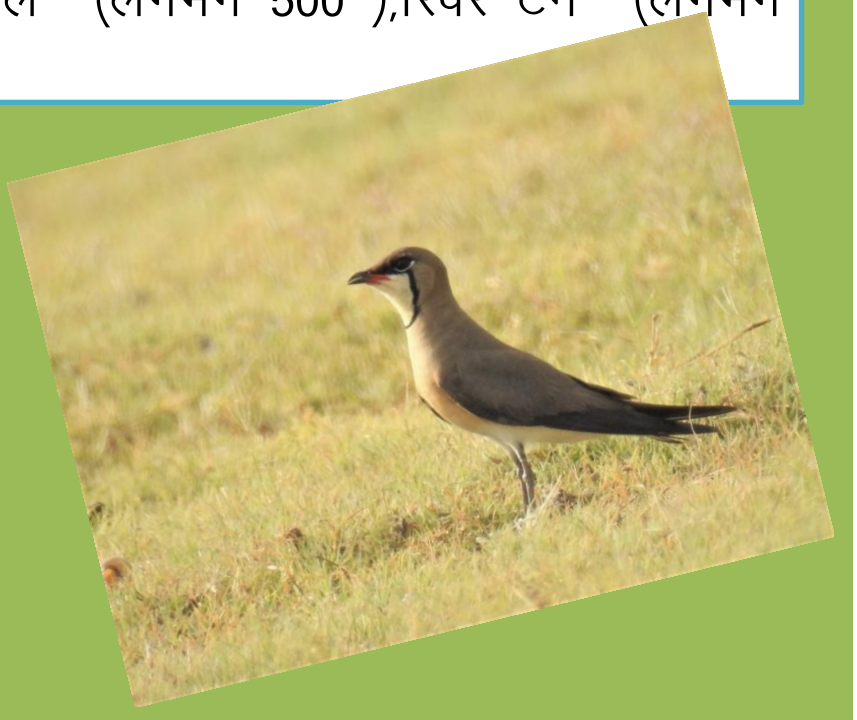

बया वीवर काउंट

दिनांक 24 जून 2018 को भोपाल बर्ड्स एवं इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क ने (बया वीवर काउंट) बया पक्षी गढ़ना कार्यक्रम का आयोजन सारस जैवविविधता केंद्र बिशनखेड़ी में आयोजित गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रति वर्ष बया पक्षी की जनसँख्या को रिकॉर्ड करना ,वालंटियर्स के माध्यम से बया पक्षी का संरक्षण करना एवं प्रजनन मौसम के दौरान इनका डाटा लेना है। बया पक्षी–समूह में रहना पसन्द करती है और काफी शोरगुल करती है। यह अपने घोंसले पानी के निकट बनाती है या फिर उन टहनियों में बनाती है जो पानी के ऊपर हों। अमूमन कांटेदार या ताड़ के वृक्षों में यह अपना घोंसला बनाना पसन्द करती है क्योंकि इसकी वजह से इसके बच्चों को परभक्षियों से सुरक्षा प्रदान होती है। यह अपने घोंसले बस्ती के रूप में बनाती हैं और प्रजनन काल में एक ही वृक्ष में या आस–पास के वृक्षों में कई घोंसले एक साथ देखने को मिलते हैं।यह पानी के पास के सरकंडों में अपना डेरा जमाती है। यह खाने और घोंसला बनाने की सामग्री के लिए घास तथा फसलों, जैसे धान, पर निर्भर करती है। फसलों के बीज यह रोपण के समय और परिपक्व होने के समय, दोनों ही परिस्थितियों में चट कर जाती है। इसके आहार में कुछ कीट, जैसे तितली भी होते हैं और इनको छोटे मेढक तथा सीप, घोंघा इत्यादि भी (खासकर अपने बच्चों को खिलाने के लिए) ले जाते देखा गया है।इसके मौसमी प्रवास भोजन की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं। इसका कलरव छोटी–छोटी ‘‘चीं–चीं’’ की ध्वनि होता है। जब प्रजनन काल न हो तो यह मंद आवाज में ध्वनि करते हैं।सर्वे के दौरान प्रतिभागियों ने बबूल ,खजूर व जामुन के वृक्षों पर इनके लगभग 30 घोंसले ओर 80 नर –मादा को चिन्हित किया।

मानसून बर्ड ट्रेल

दिनाँक 1 जुलाई 2018 को भोपाल बर्ड्स एवं सारस जैवविविधता केंद्र द्वारा पक्षी दर्शन ‘‘मानसून बर्ड ट्रेल ‘‘ कार्यक्रम का आयोजन कोलार बांध पर किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य वर्षा ऋतू के समय दिखने वाले पक्षिओं का दर्शन करवाना था। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पक्षी दर्शन एवं मानसून में मिलने वाली प्रजातियों के बारे में जानकारी प्रतिभागियों को दी गई। वर्षा ऋतू में कई पक्षी प्रजातियाँ अपना घोंसला बनाती हैं इनके बारे में भी विशेष जानकारी विषय विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को दी। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने पक्षिओं की लगभग 50 प्रजातियों को चिन्हित किया ,इनमे प्रमुख रूप से ग्रे बेलिड कुक्कू ,इंडियन कुक्कू ,पाइड क्रेस्टेड कुक्कू ,इंडियन पिटा , वाइट बेलिड ड्रोंगो ,रैकेट टेल ड्रोंगो ,स्माल मिनिवेट ,वाइट ऑय ,ब्लैक हुडेड ओरियल ,पैराडाइस फ्लाईकैचर आदि को देखा गया। कार्यक्रम में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्रोत व्यक्ति के रूप में डॉ मनोज कुमार शर्मा (प्रभारी वैज्ञानिक ,क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय,भोपाल) एवं डॉ संगीता राजगीर (भोपाल बर्ड्स) उपस्थित थे।

भोपाल मे दिखे ग्रेटर फ्लेमिंगो और ग्रे बेलिड कुक्कू

भोपाल में दुर्लभ दिखाई देने वाले ग्रेटर फ्लेमिंगो पक्षी 16 की संख्या में दिखाई दिये। ये पक्षी 8 साल बाद भोज ताल में दिखाई दे रहे हैं। ग्रेटर फ्लेमिंगो गुजरात ,महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में पाये जाते हैं।

ग्रे–बेलीड कोयल लगभग 23 सेमी की कुल लंबाई पर छोटे कुक्कू में से एक है। भारत और श्रीलंका से दक्षिण चीन और इंडोनेशिया तक ग्रे–बेलीड कुक्कू पाई जाती है । ग्रे–बेलीड कोयल एक ब्रूड परजीवी है और मेजबानों के रूप में वारब्लर्स का उपयोग करता है। यह एक अंडा देता है। इसके आहार में विभिन्न कीड़े और कैटरपिलर होते हैं।यह भोपाल के आस पास बहुत वर्षों बाद देखी गई है।

भोपाल बर्ड्स की गतिविधियाँ समाचार पत्रों में

30 घोसलों में नजर आईं 80 बया

● जागरण रिपोर्टर ●

'बया' पक्षी हमेशा ही अपने खूबसूरत घौसलों के लिए पहचानी जाती है। समूह में रहने वाली यह बर्ड हमेशा ही पानी के करीब अपने घौसले बनाती है। बया के संरक्षण एवं जनसंख्या को रिकॉर्ड करने के उद्देश्य से भोपाल बर्ड्स एवं इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क की ओर से बया पक्षी के गणना कार्यक्रम का आयोजन रविवार को किया गया। सारस जैव विविधता केंद्र बिशनखेड़ी में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में कई तरह के डेटा आदि संग्रहित किए गए। सर्वे के दौरान प्रतिभागियों ने बबूल ,खजूर व जामुन के वृक्षों पर इनके लगभग 30 घोंसले और 80 नर -मादा को चिन्हित किया।

हमेशा रहती है पानी के पास

इस मौके पर एक्सपर्ट्स ने बताया कि बया अपने घोसले के कारण काफी लोकप्रिय पक्षी है। यह काफी शोरगुल करती है। यह अपने घोसलों को पानी के निकट बनाती है।

यह घोसले बड़े आकर्षक लगते हैं। प्रजनन काल में यह एक ही वृक्ष में रहते हैं। घोसले बनाने के लिए यह घास, फसलों, धान पर निर्भर करती है। फसलों के बीज रोपण के दौरान उन्हें नुकसान पहुंचा सकती हैं। यह कीट, तितली, मेंढक, सीप, घोंघा खाती हैं।

CityLine

भोपाल बर्ड्स व इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क का बया पक्षी गढ़ना कार्यक्रम

बया के 80 नर-मादा को वृक्षों पर किया चिन्हित

कलरव होता है छोटी-छोटी चीं-चीं

The Hitavada

BHOPAL ■ Monday ■ June 11 ■ 2018

written by legendary Bhakti era poet Raskhan.

MONSOON BRINGS 60 SPECIES OF BIRDS TO BHOPAL

Bhopal: A three- day event of bird counting concluded at Saras Biodiversity Centre, Bishankhedi on Sunday. Organised by Bhopal Birds and Indian Birds Conservation Network, the event saw 25 participants who, in various groups, counted the diverse species of birds near the surroundings of Upper Lake. The aim was to know the population of birds at Bhoj Lake in the upcoming monsoon. Around 60 species were spotted – a few of them were inland while others were water resident species. While exploring, participants caught a glimpse of some migratory birds as well.

BIRDS SPOTTED

Indian river tern:	1000
Spot Bill duck:	200
Lesser whistling duck:	500
Woolly-necked stork:	100
Spoonbills:	500
Painted stork:	400

RARE SPECIES OF GREATER FLAMINGO

After eight years, the rare species of Greater Flamingo was seen near the lake. Some other bird species spotted were the Oriental Pratincole, Little Tern, Indian Paradise Flycatcher, Indian Pitta, Pied Crested cuckoo among others.

Greater Flamingo spotted at Bhoj wetland after 9 yrs, claims Ornithologist

Greater Flamingo spotted around Bhoj Wetland.

■ Staff Reporter

ON SUNDAY Bird count programme was organized at Bhoj wet land. One of the major attractions of Bird counting was to sight The Greater Flamingo Bird, which is rare appeared in 16 numbers.

Ornithologist said that these birds are visible in Bhoj Tal after nine years. Greater Flamingo is found in large numbers in Gujarat, Maharashtra. The greater flamingo is the most widespread and largest species of the flamingo family. Talking to 'The Hitavada' Mohammed Khalique ornithologist and founder of Bhopal Birds claims that it was very rare that this bird is spotted in city like Bhopal. Usually these birds use Madhya Pradesh region as stoppages and prefer salty water near marshes. Last time it was spotted in the year 2009 at Upper Lake but were only two in number and now it's very much delight to spot greater flamingo in such large numbers .These waders are seen in city basically because it is getting surplus of food and water supply.

Like all flamingos, this species lays a single chalky-white egg on a mud mound. Most of the plumage is pinkish white, but the wing coverts are red and the primary and secondary flight feathers are black

The programme was organised by Bhopal Birds in collaboration with India Bird Conservation Network and Saras Biodiversity Centre at Bisenkhedi. This programme was organised with main objective of Bird counting. The objective of this program was to count the birds in and around Upper Lake in the rainy season. With pre monsoon showers birds influx in the region has been increased

Total 25 participants took part in this programme. The participants were sent separately to form different teams around Upper Lake. These participants identified about 60 species of aquatic and terrestrial birds.

The participants identified many migratory and rare birds during the visit . The main birds and numbers seen in the cast are as follows which includes Stork Crane in about 120 numbers , Greater Flamingo approximately around 16 birds were spotted, Spot Bill Duck about 200 were spotted , Lesser Whistling Duck about 500 were spotted .

Other birds like around 400 Painted Stork and around 50 Oriental Prentikol were sighted, about 100 Woollen neck Stork were spotted , about 500 Spoon bill and around 1000 river tern bird spotted besides 50 little tern etc.

Besides these birds, other birds, Dakshinraj (Paradise Falicator), Indian Pitta , which were visible in the rainy season, were also seen during the visit . The Indian pitta (Pitta brachyura) is a passerine bird native to the Indian subcontinent. It inhabits scrub jungle, deciduous and dense evergreen forest. Breeding in the forests of the Himalayas, hills of central and western India, they migrate to other parts of the peninsula in winter.

The Indian pitta is a small stub-by-tailed bird that is mostly seen on the floor of forests or under dense undergrowth, foraging on insects in leaf litter.

The pied crested cuckoo is a member of the cuckoo order of birds that is found in Africa and Asia. It is partially migratory and in India, it has been considered a harbinger of the monsoon rains due to the timing of its arrival.

सिटी ACTIVITY

BHOPAL, MONDAY, 11/06/2018 . 20

आठ साल बाद शहर आए ग्रेटर फ्लेमिंगो

बर्ड वॉचिंग कैंप में 25 बर्ड लवर्स ने देखे 60 जलीय और स्थलीय पक्षी, रेनी सीजन में आने वाले ये बर्ड्स इन दिनों अपर लेक में देखे जा सकते हैं

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

ओरिएंटल प्रैटिकोल

पेंटेड स्टॉर्क

दिखाई दिए 50 ओरिएंटल प्रैटिकोल, 16 ग्रेटर फ्लेमिंगो

सारस जैव-विविधता केंद्र की ओर से पक्षी दर्शन 'मानसून बर्ड ट्रेल' का आयोजन

मानसून बर्ड ट्रेल में नजर आए ग्रे-बेलिड कुक्कू, व्हाइट बेलिड ड्रोंगो, स्मॉल मिनिवेट और ब्लैक हुडेड ओरियॉल

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

लंबे अरसे बाद दिखी दुर्लभ ग्रे बेलिड कुक्कू

'Monsoon Bird Festival' organised at Kolar Dam

Participants at Monsoon Bird Festival in Kolar Dam.

Gray-bellied cuckoo spotted near Kolar Dam area.

■ Staff Reporter

ON SUNDAY Bhopal birds association and Saras Biodiversity Center organised the bird festival 'Monsoon Bird' at Kolar Dam. The purpose of the programme was to identify the birds appearing during the rainy season. Participants were given information about the species found in bird watching and monsoon in the beginning of the programme.

Many bird species make their nests in the rainy season, and special information about them is given by the subject experts to the participants. During the programme, participants identified nearly 50 species of birds, mainly in the form of gray bellied cuckoo, Indian cuckoo, pied crested cuckoo etc.

Other birds identified includes Indian pita, white-bellied drongo, Racket-tailed Drongo, small minivet. The drongos are conspicuous in the forest habitats often perching in the open and by attracting attention with a wide range of loud calls that include perfect imitations of many other birds. Experts said that, they feed mainly on insects but also eat fruit and visit flowering trees for nectar. Having short legs, they sit upright and are often perched on high and exposed branches. They are aggressive and will sometimes mob larger birds especially when nesting

The small minivet is 16 cm long with a strong dark beak and long wings. The male differs from most other common minivets by having grey, not glossy black, upperparts and head, and orange underparts, fading to yellow on the belly, orange tail edges, rump and wing patches.

Besides black hooded orile, Paradis Flycatcher etc were also seen. There were around 25 participants who attended the programme. Dr Manoj Kumar Sharma (Incharge Scientific, Regional Natural Science Museum, Bhopal) and Dr Sangeeta Rajgir (Bhopal Birds) were present as the experts. They informed the participants that grey-bellied cuckoo is one of the small cuckoo on a total length of about 23 cm. Adults are mainly brown with a white lower abdomen and venture. There is a white patches on the wings. Some females have black-haired reddish brown with an uninterrupted tail, but the appearance of juvenile females is but light brown.

Gray-bellied cuckoo is found from India and Sri Lanka to South China and Indonesia. It is a short distance migrant and likes light woodland and farming areas. Gray-bellyd cuckoo is a brood parasite and uses warbels as hosts. It gives an egg. Its diet consists of various insects and caterpillars and is seen mainly around water bodies Bhopal after many years mainly because of availability of food and possibility of nesting.

भोपाल बर्ड्स कंजर्वेशन सोसाइटी

संपर्क :

मो.खालिक

संस्थापक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी

9303115519

डॉ संगीता राजगीर

संस्थापक एवं सदस्य सचिव

9329990886

WhatsApp 9424492454 bhopalbirds.ecs bhopalbirds :www.bhopalbird.org